International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 3, March- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आधुनिक सांस्कृतिक पहचान को आकार देने पर साहित्य का प्रभाव

डॉ. कलंदर बाषा. शेक. सह आचार्य, हिंदी विभाग
शासकीय महाविद्यालय, गोदावरी खनी, पेद्दापल्ली जिला
तेलंगाना - 505209

सार

साहित्य हमेशा व्यक्तिगत और सांस्कृतिक दोनों पहचान बनाने में महत्वपूर्ण रहा है। साहित्य व्यक्तियों के अनुभवों, सांस्कृतिक उत्पत्ति और व्यक्तिगत विकास के प्रतिनिधित्व के माध्यम से मानव पहचान की जटिलता को दर्शाता है। पाठकों को विभिन्न दृष्टिकोणों और कहानियों से अवगत कराकर, वे पाठकों को अपने स्वयं के बारे में बेहतर ज्ञान प्राप्त करने में मदद करते हैं। यह लेख व्यक्तिगत और सांस्कृतिक स्तर पर पहचान के विकास पर साहित्य के महत्वपूर्ण प्रभाव की जांच करेगा। विभिन्न साहित्यिक कृतियों की कहानियों की जांच के माध्यम से, हम सीखते हैं कि कैसे पात्रों की यात्राएं पाठकों के लिए एक दर्पण के रूप में काम करती हैं, पहचान की जटिलता और इसकी लगातार बदलती प्रकृति को उजागर करती हैं। पाठक इन कहानियों के माध्यम से पात्रों को बाधाओं पर काबू पाते, सामाजिक मानदंडों पर विचार करते हुए और लोगों के रूप में विकसित होते हुए देख सकते हैं। इस जांच के परिणामस्वरूप पाठकों को अपने व्यक्तिगत विकास और जीवन की घटनाओं की परिवर्तनकारी क्षमता पर विचार करने के लिए प्रेरित किया जाता है, जो पहचान की तरलता के बारे में अधिक जागरूकता पैदा करता है। पाठकों को साहित्य में चित्रित विभिन्न दृष्टिकोणों और यात्राओं के माध्यम से पहचान की जटिलता और इसके चल रहे विकास का समृद्ध ज्ञान दिया जाता है।

मुख्य शब्द: *भाषा, साहित्य, पहचान, संस्कृति*

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 3, March- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रस्तावना

साहित्य अक्सर सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की खोज करता है, जिससे पाठकों को विभिन्न प्रथाओं, परंपराओं और मूल्यों की समझ मिलती है। साहित्य विभिन्न सांस्कृतिक पहचानों को प्रदर्शित करके, सहानुभूति और समझ को प्रोत्साहित करके पाठकों की धारणाओं को व्यापक बनाता है। उदाहरण के लिए, पाठकों को चिनुआ अचेबे की "थिंग्स फ़ॉल अपार्ट" (1958) में ओकोंकोव से परिचित कराया जाता है, जो एक व्यक्ति है जो अपनी इग्बो पारंपरिक परंपराओं और यूरोपीय उपनिवेशवाद के आक्रमण के बीच संघर्ष से जूझता है।[1] पाठक ओकोंकोव की कहानी के माध्यम से सांस्कृतिक विरासत और व्यक्तिगत पहचान के बीच जटिल संबंध के बारे में सीखते हैं। साहित्य पढ़ने से पाठकों को उन संस्कृतियों का परिचय मिलता है जिनसे वे परिचित नहीं हो सकते हैं और उन्हें मानवीय अनुभवों की विविधता और गहराई को समझने में मदद मिलती है। इसके अतिरिक्त, जातीय मूल का साहित्यिक प्रतिनिधित्व गलत धारणाओं को दूर कर सकता है और पहचान बनाने से जुड़ी कठिनाइयों की ओर ध्यान दिला सकता है। सेथे, एक पूर्व दास जो टोनी मॉरिसन की "बिलव्ड" में दिखाई देती है, अपनी पिछली पीड़ा का सामना करती है और अपनी पहचान को पुनः प्राप्त करने की कोशिश करती है। सेठे की खोज के माध्यम से पाठकों को गुलामी के लंबे समय तक रहने वाले परिणामों और अन्याय के सामने मानवीय भावना की ताकत का सामना करने के लिए मजबूर किया जाता है। साहित्य के माध्यम से असुविधाजनक तथ्यों का सामना किया जा सकता है, जो पाठकों को अपने स्वयं के सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों और धारणाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने के लिए भी प्रोत्साहित करता है।[2]

व्यक्तिगत विकास और पहचान की तरलता अक्सर साहित्यिक विषय होते हैं जो मानव पहचान की परिवर्तनशील प्रकृति पर जोर देते हैं। साहित्यिक कार्यों में अक्सर ऐसे पात्र शामिल होते हैं जो परिवर्तनकारी अनुभवों से गुजरते हैं ताकि यह दिखाया जा सके कि पहचान स्थिर नहीं है बल्कि समय के साथ बदलती रहती है। ये कहानियाँ मानवीय अनुभव की सूक्ष्मताओं और पेचीदगियों को उजागर करती हैं, पाठकों को अपनी स्वयं की भावना और उन चीजों पर विचार करने के लिए प्रेरित करती हैं जो उन्हें वह बनाती हैं जो वे हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 3, March- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

वर्जीनिया वुल्फ की पुस्तक "मिसेज डैलोवे" की मुख्य पात्र क्लेरिसा डैलोवे, पहचान की तरलता और व्यक्तिगत विकास का एक चमकदार उदाहरण बनकर सामने आती हैं।[3] क्लेरिसा पूरी कहानी में अपनी यादों, चाहतों और समाज की अपेक्षाओं पर बातचीत करते हुए आत्मनिरीक्षण और आत्मचिंतन में संलग्न रहती है। पाठकों को इस बात पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि किसी व्यक्ति की स्वयं की भावना व्यक्तिगत निर्णयों और अनुभवों के साथ-साथ उसकी आंतरिक जांच के परिणामस्वरूप पहचान की लचीलापन से कैसे आकार ले सकती है।

पाठकों को उन असंख्य पहलुओं के बारे में सोचने के लिए आमंत्रित किया जाता है जो उनकी अपनी समझ बनाने में सहायक होते हैं क्योंकि वे क्लेरिसा की बढ़ती जागरूकता का अनुसरण करते हैं कि वह कौन है और वह दुनिया में कहां फिट बैठती है। सामाजिक परंपराओं और अपेक्षाओं का उल्लंघन करने वाले चरित्र अक्सर साहित्यिक कार्यों में देखे जाते हैं, जो पाठकों को पहचान की पूर्वकल्पित अवधारणाओं पर आलोचनात्मक रूप से विचार करने के लिए प्रेरित करते हैं। डोरियन ग्रे के आकार में, ऑस्कर वाइल्ड की पुस्तक "द पिक्चर ऑफ डोरियन ग्रे" (1890) का शीर्षक चरित्र ऐसी आकृति का प्रतिनिधित्व करता है। डोरियन एक भयानक रास्ते पर निकल पड़ता है जिसके परिणामस्वरूप अंततः उसका अपना विनाश होता है क्योंकि वह चिर यौवन और आनंद की अपनी इच्छा से प्रेरित होता है।[4] डोरियन के परिवर्तन के माध्यम से पाठकों को सामाजिक दबावों के आगे झुकने के नकारात्मक प्रभावों और बाहरी अपेक्षाओं के सामने ईमानदार होने के महत्व से अवगत कराया जाता है। यह सावधान करने वाली कहानी पाठकों को अपने स्वयं के निर्णयों पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है और कैसे वे निर्णय उनकी स्वयं की भावना और व्यक्तिगत विकास की क्षमता को प्रभावित करते हैं। साहित्य पढ़ना पाठकों को अपनी पहचान और उन्हें आकार देने वाले निर्णयों पर विचार करने में सक्षम बनाकर आत्मनिरीक्षण को प्रोत्साहित करता है (ओजाइड, 1992)। पात्रों की स्वयं की विकास यात्रा को देखने के बाद पाठक आत्म-खोज और रोमांच की अपनी यात्रा पर निकलने के लिए प्रेरित होते हैं।[5]

उन्हें याद दिलाया जाता है कि पहचान एक जीवित, विकसित होती अवधारणा है जो समय, रिश्तों और व्यक्तिगत अनुभवों सहित कई प्रकार के चर से प्रभावित होती है। साहित्य पाठकों

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 3, March- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

को अपनी पहचान की तरलता को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करता है, जिससे उन्हें पहचान बनाने में आने वाली कठिनाइयों को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती है। निष्कर्षतः, व्यक्तिगत विकास और पहचान की लचीलापन महत्वपूर्ण साहित्यिक विषय हैं जो पाठकों के लिए मानव अस्तित्व की तरलता को रेखांकित करने का काम करते हैं।[6] पाठकों को अपनी स्वयं की भावना पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है क्योंकि वे अपनी परिवर्तनकारी यात्राओं पर पात्रों का अनुसरण करते हैं, जो मानवीय अनुभव की जटिलता का प्रतिनिधित्व करते हैं। साहित्य पाठकों को समाज के मानदंडों और अपेक्षाओं पर सवाल उठाकर अपने स्वयं के निर्णयों और उन निर्णयों का उनकी पहचान पर पड़ने वाले प्रभावों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने की अनुमति देता है। पाठक पहचान की क्षणिक प्रकृति की समझ हासिल करते हैं और विभिन्न प्रकार की कहानियों से जुड़कर आत्म-खोज और व्यक्तिगत विकास की अपनी यात्रा शुरू करने के लिए प्रेरित होते हैं।[7]

साहित्य की अंतर्विभागीयता

मानव पहचान कितनी जटिल है, इस पर प्रकाश डालने के लिए साहित्य और अंतर्संबंध मिलकर काम करते हैं। अंतर्विभागीयता स्वीकार करती है कि लोगों की कई अतिव्यापी पहचानें होती हैं, जिनमें से प्रत्येक को विभिन्न प्रकार के विशेषाधिकार और उत्पीड़न द्वारा आकार दिया जाता है। पाठकों को साहित्यिक कृतियों में उन पात्रों के साथ बातचीत करने का मौका मिलता है जो इन अंतर्संबंधों से निपटते हैं, पहचान का एक गहरा परिप्रेक्ष्य और परिस्थितियों को पार करने के कारण आने वाली कठिनाइयों को प्रदान करते हैं। ऐलिस वॉकर (1982) की एक पुस्तक "द कलर पर्पल", साहित्य के एक उदाहरण के रूप में कार्य करती है जो अंतरसंबंध की जांच करती है। 20वीं सदी की शुरुआत में, मुख्य पात्र सेली को एक गरीब अफ्रीकी-अमेरिकी महिला के रूप में अपनी पहचान के जंक्शन से निपटना होगा।[8] उनके अनुभवों से पता चलता है कि नस्ल, लिंग और सामाजिक वर्ग पर आधारित उत्पीड़न कैसे आपस में जुड़े हुए हैं। पाठक सेली की कहानी में पूरी तरह डूबकर सत्ता और विशेषाधिकार की प्रणालियों के तहत पहचान निर्माण की जटिलता से अवगत होते हैं। यह प्रदर्शन पाठकों को

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 3, March- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उन परस्पर संबंधित तत्वों को देखने और उन पर सवाल उठाने की अनुमति देता है जो उनकी अपनी पहचान और अन्य लोगों के जीवन दोनों को प्रभावित करते हैं।[9]

साहित्य पहचान की जटिलता का पता लगाने और समावेशन की वकालत करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। पाठकों को सरल वर्गीकरणों से परे देखने और पात्रों की परस्पर विरोधी पहचानों की खोज करके मानव अस्तित्व में मौजूद जटिलताओं की सराहना करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। पाठकों को विभिन्न आख्यानों के संपर्क में आने और साहित्य में अंतर्संबंध की जांच के माध्यम से उन विभिन्न तरीकों की बेहतर समझ मिलती है जिनमें पहचान एक-दूसरे को पार करती है और प्रभावित करती है। इसके अतिरिक्त, साहित्य पाठकों को पात्रों की परस्पर विरोधी पहचानों का अनुभव करने का एक तरीका देता है, जो सहानुभूति और समझ को बढ़ावा देता है (क्रैम्श, 1998)। जो पाठक इन आख्यानों से जुड़ते हैं वे उन लोगों के विशेष संघर्षों और दृष्टिकोणों के बारे में सीखते हैं जिनकी पहचान विभिन्न तरीकों से मिलती है। यह तकनीक पाठकों को सहानुभूति को बढ़ावा देने के साथ-साथ अपने स्वयं के पूर्वाग्रहों, अनुमानों और विशेषाधिकारों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने की अनुमति देती है। साहित्य में अंतरसंबंध का अध्ययन हमें व्यापक परिप्रेक्ष्य से पहचान को समझने में मदद करता है। एक-आयामी कहानियों से परे, यह पाठकों को यह देखने के लिए प्रेरित करता है कि कितने उत्पीड़न और विशेषाधिकार आपस में जुड़े हुए हैं।[10]

साहित्य पाठकों को पहचान की जटिलता और सामाजिक संस्थाओं के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने की अनुमति देता है जो अंतरसंबंध को पहचानने और अपनाने के द्वारा हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं। अंतर्संबंध और पहचान की जटिल प्रकृति को पूरी तरह से समझने के लिए साहित्य एक आवश्यक उपकरण है। साहित्य ऐसे पात्रों का परिचय देकर पाठकों को लोगों के सामने आने वाली कठिनाइयों और जटिलताओं का पूरा ज्ञान प्रदान करता है जो कई पहचानों के अंतर्संबंधों पर सफलतापूर्वक बातचीत करते हैं। इन कहानियों के माध्यम से, पाठकों को अपरिष्कृत वर्गीकरणों से परे जाने, पहचान बनाने वाले परस्पर संबंधित पहलुओं को पहचानने और समावेशन और सहानुभूति को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। साहित्य पढ़ने से पाठकों को अपने स्वयं के पूर्वाग्रहों और विशेषाधिकारों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने की प्रेरणा मिलती है, जिससे मानव होने के अधिक जटिल

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 3, March- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

और सर्व-समावेशी परिप्रेक्ष्य को बढ़ावा मिलता है। सामाजिक अपेक्षाओं और किसी व्यक्ति की खुद के प्रति सच्चा होने की इच्छा के बीच विरोधाभास अक्सर साहित्यिक कार्यों में खोजा जाता है जो प्रामाणिकता की खोज का पता लगाते हैं।[11]

पाठक जो इसी तरह अपने व्यक्तित्व के कुछ तत्वों को अपनाने या दबाने के लिए साथियों के दबाव से पीड़ित हो सकते हैं, वे प्रामाणिकता के साथ पात्रों के मुद्दों की पहचान कर सकते हैं। पाठकों को पढ़ने के माध्यम से ईमानदारी और आत्म-खोज की अपनी खोज पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। राल्फ एलिसन द्वारा लिखित "इनविजिबल मैन" में, नामहीन नायक उन उम्मीदों से जूझता है जो नस्लीय रूप से अलग-थलग समाज में एक काले आदमी के रूप में उससे लगाई जाती हैं। सामाजिक मानदंडों को पूरा करने के दबाव के बावजूद, उसे अपनी विशिष्टता व्यक्त करने और अपनी आवाज़ स्थापित करने में कठिनाई होती है।[12] पाठकों को उन सामाजिक भूमिकाओं पर विचार करने के लिए प्रेरित किया जाता है जो वे निभाते हैं और जिस तरह से बाहरी प्रभाव प्रभावित करते हैं, वे प्रामाणिकता के लिए नायक की खोज के परिणामस्वरूप अपनी स्वयं की पहचान को कैसे परिभाषित करते हैं। साहित्य पढ़ने से पाठकों को अपनी पहचान बनाने में लिए गए निर्णयों पर विचार करने और इस बात पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि क्या उनके वास्तविक स्व और वे व्यक्तित्व जो वे बाहरी दुनिया के सामने पेश करते हैं, संगत हैं। पाठक पहचान विकास की कठिनाइयों की समझ हासिल करते हैं और साहित्यिक कार्यों में प्रामाणिकता की खोज के बारे में पढ़कर आत्म-खोज की अपनी यात्रा शुरू करने के लिए प्रेरित होते हैं।

यह विचार कि साहित्य खिड़की और दर्पण दोनों के रूप में कार्य करता है, पाठकों के जीवन में साहित्यिक कृतियों के दोहरे कार्य को उजागर करता है। साहित्य पाठकों के अनुभवों और पहचानों के लिए एक दर्पण के रूप में कार्य करता है, जिससे उन्हें अपने सामने आने वाले पात्रों और कहानियों में खुद को और उनकी भावनाओं को पहचानने में मदद मिलती है। यह आत्मनिरीक्षण उन्हें अपने विचारों और दृष्टिकोणों को मान्य करके मान्यता और जुड़ाव की भावना देता है। जब पाठक साहित्य में अपने जीवन के तत्वों को पहचानते हैं, तो यह उनकी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 3, March- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उपस्थिति को मान्य करता है और उनके ज्ञान को बढ़ाता है कि वे कौन हैं। हालाँकि, साहित्य एक खिड़की के रूप में भी काम करता है, जो पाठकों को दूसरी दुनिया और दृष्टिकोण की झलक देता है। यह अपने स्वयं के अनुभवों से बाहर निकलते हुए विभिन्न संस्कृतियों, विचारों और पहचानों के साथ बातचीत करने का अवसर प्रदान करता है। पाठकों को साहित्य के माध्यम से अन्य युगों, स्थानों और सामाजिक परिस्थितियों में ले जाया जाता है, जिससे दुनिया के बारे में उनकी जागरूकता बढ़ती है और सहानुभूति पैदा होती है। विविध पृष्ठभूमि, राय या चुनौतियों वाले व्यक्तियों के संपर्क में आने से पाठकों को मानव अस्तित्व की बारीकियों का व्यापक परिप्रेक्ष्य और समझ प्राप्त होती है।[13]

अध्ययन का उद्देश्य

1. साहित्य और सांस्कृतिक पहचान का अध्ययन
2. आधुनिक सांस्कृतिक पहचान का अध्ययन

तुलनात्मक साहित्य और सांस्कृतिक पहचान

सांस्कृतिक पहचान की समस्या में स्वयं और संस्कृति का प्रश्न शामिल है। दूसरे शब्दों में, इसका अर्थ है स्वयं संस्कृति के सार पर चिंतन करना और यह निहितार्थ कि आत्म-प्रश्न करने का एक उचित उद्देश्य है। बदले में, हम यह भी पूछ सकते हैं कि क्या आत्म-प्रश्न हमारे स्वयं के समस्याग्रस्त, अनिश्चित, या अपर्याप्त रूप से प्रतिबिंबित विचार से प्रेरित है या विश्लेषणात्मक रूप से संस्कृति की नाजुकता की पुष्टि करने की इच्छा से प्रेरित है। साहित्यिक अध्ययन के दृष्टिकोण से, सांस्कृतिक पहचान का प्रश्न मुख्य रूप से उस समुदाय में साहित्यिक पहचान के संदर्भ में है जिसमें हम रह रहे हैं। यहां, बख्तिन का तर्क है कि "साहित्य संस्कृति की समग्रता का एक अविभाज्य हिस्सा है और इसका समग्रता के बाहर अध्ययन नहीं किया जा सकता है।" सांस्कृतिक संदर्भ। इसे बाकी संस्कृति से अलग नहीं किया जा सकता है और सीधे (संस्कृति को दरकिनार कर) सामाजिक-आर्थिक या अन्य कारकों से संबंधित नहीं किया जा सकता है। ये कारक संस्कृति को समग्र रूप से और केवल इसके माध्यम से प्रभावित करते हैं और इसके साथ मिलकर वे साहित्य को प्रभावित करते

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 3, March- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

हैं। साहित्यिक प्रक्रिया सांस्कृतिक प्रक्रिया का एक हिस्सा है और इसे इससे अलग नहीं किया जा सकता" (बख्तिन 1986, 140) मेरी चर्चा के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक है।

हालाँकि, यदि साहित्य के अस्तित्व को संरचनावाद (और, एक अन्य संदर्भ में, हेइडेगर द्वारा) के संदर्भ में भाषा की संभावनाओं (और इसके माध्यम से अपवर्तित ऐतिहासिक चेतना) के पुन: परीक्षण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, तो साहित्यिक समस्या पहचान तार्किक रूप से मूल भाषा के प्राकृतिक वातावरण, यानी किसी की राष्ट्रीय संस्कृति तक सीमित हो जाएगी। ऐसा दृष्टिकोण, निश्चित रूप से, हमारी सदी के अंत में साहित्यिक पहचान की प्रासंगिक व्याख्या नहीं हो सकता है क्योंकि यह पहचान की अवधारणा को प्रकट करता है जो विशेषताओं को अस्वीकार्य रूप से सीमित और आत्म-संदर्भित बताता है। राष्ट्रीय संस्कृति के साथ साहित्यिक पहचान की पहचान उन्नीसवीं सदी में कल्पना की गई पहचान के विचार का प्रतिगमन है।[14] स्वच्छंदतावाद और उत्तर-रोमांटिकवाद का साहित्य राष्ट्रीय संस्थाओं की पुष्टि करने वाले कारक और सांस्कृतिक स्व के वास्तविक प्रतिनिधित्व के रूप में स्वीकार्य था। पहचान की यह समझ किसी दिए गए विषय की आंतरिक वास्तविकता के रूप में स्वयं की रोमांटिक व्याख्या का परिणाम थी। इसने अपने आप में विषय की अवधारणा को एक पूर्ण और स्वायत्त प्राणी के रूप में प्रकट किया और स्वयं के बाहर किसी भी निर्णायक या अनिवार्य संदर्भ से इनकार किया। इसने अपने से बाहर अतिक्रमण को नकार दिया और खुद को केवल अपनी अंतर्निहित वास्तविकता या अपनी अंतर्निहित वैधता के साथ पहचाना। स्वच्छंदतावाद के विषय ने खुद को अपनी स्वयं की व्यक्तिपरकता से परिभाषित किया, इसकी व्याख्या आत्म-जागरूक, आत्मनिर्भर और आत्म-संदर्भित होने के रूप में की गई। स्वच्छंदतावाद में, अस्तित्व को केवल आंतरिक चेतना के रूप में समझने योग्य होने के बावजूद प्रामाणिक माना जाता था।

संस्कृति और साहित्य पर इस तरह के न्यूनीकरणवादी दृष्टिकोण की अपर्याप्तता, उदाहरण के लिए, "राष्ट्र की आत्मा" (हर्डर), वास्तव में, गोएथे द्वारा पहले से ही संकल्पित थी जब उन्होंने विश्व साहित्य की अवधारणा का निर्माण किया था। लेकिन स्वच्छंदतावाद के जिस्तेसगेस्चिचट्लिच फ्रेम में खुलेपन के किसी भी संकेत को केवल रोमांटिक निरपेक्ष और

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 3, March- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

स्वायत्त विषय की आत्म-पुष्टि के रूप में समझा गया था। खुलेपन को अतिक्रमण की विशेषता या रोमांटिक स्व के आत्म-मूल्यांकन के रूप में समझने की कोई भी धारणा केवल रोमांटिक विडंबना की घटना में पाई जा सकती है। इस प्रकार, सांस्कृतिक पहचान की समस्या निस्संदेह हमें अंतर-सांस्कृतिक अंतःक्रिया के प्रश्न की ओर संदर्भित करती है। इस तरह से विचार करने पर, यह मुख्य रूप से तुलनात्मक साहित्य के क्षेत्र से संबंधित एक अवधारणा है।[15]

किसी राष्ट्र में साहित्यिक कार्य, शैलियाँ, प्रवृत्तियाँ और कलात्मक अभिविन्यास की अवधि, जैसा कि इतिहास के माध्यम से प्रकट होता है, सांस्कृतिक इतिहास के बंद राष्ट्रीय अस्तित्व की पृथक घटनाओं के रूप में मौजूद नहीं हो सकता है और अन्य राष्ट्रीय संस्कृतियों की साहित्यिक घटनाओं के साथ संपर्क के बिना समझा नहीं जा सकता है। किसी भी सांस्कृतिक पहचान की पहचान या उसका विश्लेषण केवल उसके राष्ट्रीय धरातल पर नहीं किया जा सकता। किसी भी राष्ट्रीय संस्कृति को अन्य प्रभावशाली संस्कृतियों की सीमाओं पर आकार दिया गया था। उदाहरण के लिए, द फ़्रीज़िंग पांडुलिपि (आठवीं सदी के अंत या नौवीं सदी की शुरुआत का एक स्लोवेनियाई पाठ) अन्य बातों के अलावा, लैटिन और पुराने उच्च जर्मन निशानों का प्रमाण देता है। स्पष्ट रूप से, साहित्य कई संस्कृतियों के पारस्परिक कलात्मक और अन्य प्रभावों, विभिन्न सांस्कृतिक परिस्थितियों में उत्पन्न कलात्मक अभिव्यक्ति की पारस्परिक अंतःक्रिया और इस प्रकार अन्यता के पारस्परिक स्वागत की एक अंतरसांस्कृतिक ऐतिहासिक घटना के अलावा नहीं हो सकता है। "अन्यता" अपरिवर्तनीय रूप से सांस्कृतिक वास्तविकता है। अन्य आवश्यक रूप से अपने स्वत्व या अपनी पहचान के सिद्धांतों को खतरे में नहीं डालता है: "वास्तविकता सिद्धांत अन्यता के सिद्धांत के साथ मेल खाता है" (डी मैन 103)। इस धारणा के अनुसार, सांस्कृतिक पहचान की वैधता उसमें निहित राष्ट्रीय व्यक्तिपरकता की मौलिकता के माप के बराबर नहीं हो सकती।

सांस्कृतिक पहचान का निर्माण अपने स्वयं के "विखंडन" और सांस्कृतिक संबंधों के स्थायी गुणन से होकर गुजरता है। नतीजतन, सांस्कृतिक और साहित्यिक प्रभावों के अंतर्संबंध से पहचान की हानि नहीं होती है। बल्कि, यह एक एकाधिक विमान का निर्माण करता है जहां अभी तक निष्क्रिय संभावनाएं परस्पर क्रिया करती हैं और विलीन हो जाती हैं। यूरोप में

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 3, March- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

विभिन्न संस्कृतियों का सम्मिलन उनके अस्तित्व का एक स्थायी कारक रहा है। दूसरी ओर, यूरोपीय सांस्कृतिक और साहित्यिक इतिहास में सीमांत घटनाओं की भूमिका और छोटी संस्कृतियों के साथ संपर्क के निशान महत्वहीन नहीं थे। पहचान की अवधारणाओं का अर्थ केवल "कुछ बनना" या "स्वयं के समान होना" नहीं हो सकता है, या, दूसरे शब्दों में, पहचान को "होने का पहला तरीका" के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए (डेस्कोम्बेस 35, 37)। बल्कि, पहचान का सिद्धांत अन्यता के सिद्धांत के साथ मेल खाता है या - बख्तिन की शब्दावली का उपयोग संवादवाद के सिद्धांत के साथ करें: "स्वयं दूसरे का उपहार है" (केर्शनर एक्स में क्यूटीडी)। एक ऐतिहासिक अवधारणा के रूप में, सांस्कृतिक पहचान का तात्पर्य अपने आप में अंतर का परिचय देना है, यानी, अपने अस्तित्व में पारस्परिकता का एक तत्व (डेस्कोम्बेस 38)।

सांस्कृतिक पहचान - ऐतिहासिक प्रक्रिया के एक तत्व के रूप में एक ही प्रकृति की नहीं रह सकती है और यह कभी भी अपने आप में कायम नहीं रहती है; इसे निश्चित, अपरिवर्तित रूप में संरक्षित नहीं किया जा सकता; इसे अन्य और अन्यता के साथ निरंतर संपर्क के माध्यम से परिवर्तनशीलता और अभिनव प्रकृति के अपने प्रामाणिक निर्माण को पेश करने का "ईश्वरीय विशेषाधिकार" विरासत में मिला है। इसके अनुसार, साहित्य में व्यक्त सांस्कृतिक पहचान अन्य संस्कृतियों और साहित्य के साथ निरंतर संवाद के माध्यम से पुनः स्थापित होती है। यह संवादात्मक प्रकृति पूर्व-निर्धारित करती है कि सांस्कृतिक पहचान और/साहित्य का अध्ययन तुलनात्मक साहित्य के अनुशासन के उपकरणों के साथ सबसे अच्छा किया जाता है। तुलनात्मक साहित्य के अंतर्गत, मेरा प्रस्ताव है कि बख्तीन के कार्य द्वारा सांस्कृतिक पहचान के अध्ययन के लिए सबसे उपयुक्त पद्धति प्रदान की जाए। अधिक सटीक रूप से, मेरा मतलब बख्तिन से है जहां वह पहले के औपचारिकताओं के आध्यात्मिक अभिविन्यास से परे जाता है और जहां उसने निर्धारित वैचारिक अद्वैतवाद और अधिनायकवाद की विशिष्ट परिस्थितियों में अपने विचारों को विकसित किया है। दोनों संदर्भों, औपचारिकतावादी और अधिनायकवादी, ने बख्तीन और उनके अनुयायियों द्वारा विशिष्ट दार्शनिक और सैद्धांतिक प्रतिक्रियाएं उत्पन्न कीं और पश्चिमी तर्कसंगतता के संगठन में मूलभूत खामियों को उजागर किया। संवादवाद के बारे में बख्तीन के विचार,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 3, March- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

वास्तव में, यूरोपीय तर्कसंगतता को उसकी दुविधाओं से बाहर निकालते हैं, क्योंकि वे अन्यता की विचारधारा की ओर ध्यान केंद्रित करते हैं। वैचारिक एकालापवाद पर काबू पाने के रूप में अन्यता की बख्तीनियन विचारधारा की घटना आधुनिकतावाद की प्रारंभिक अभिव्यक्तियों के बाद यूरोपीय विचार की आत्म-चेतना में ऐतिहासिक परिवर्तनों के कारण थी।

समकालीन उत्तरसंरचनावादी परिसर की पृष्ठभूमि पर बख्तीन के काम का आलोचनात्मक अध्ययन साहित्यिक सिद्धांत में प्रभावशाली साबित हो सकता है। लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बख्तीन के विशिष्ट शब्दावली समाधान हैं जिन्होंने कला के कुछ नैतिक और वैचारिक आयामों को प्रकाश में लाया है। अस्सी के दशक में, सैद्धांतिक बहसों में बख्तीन के मुद्दों की बेहद अच्छी स्वीकृति के एक दशक के बाद, पॉल डी मैन ने संदेह के साथ हस्तक्षेप किया: "क्यों इस धारणा को बहुत ही विविध अनुनय के सिद्धांतकारों द्वारा इतने उत्साह से स्वीकार किया जा सकता है और इसे एक वैध तरीके के रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है उन अनेक उलझनों में से, जिन्होंने हमें इतने लंबे समय तक परेशान किया है"। हालाँकि, डी मैन ने बख्तिन में संवादवाद की अंतर्निहित गुणवत्ता, अर्थात् संघर्ष और विरोधाभास, यानी, अन्यता के लिए अंकित स्थान को कुछ अलग और विरोधी के रूप में अंकित करने की गुणवत्ता को गलत बताया। 1929 में वोलोशिनोव के नाम से प्रकाशित अपने मार्क्सिज्म एंड फिलॉसफी ऑफ लैंग्वेज में बख्तिन ने अपने विचारों को एक ऑन्टोलॉजिकल फ्रेम प्रस्तुत किया और संवादवाद को एक ही चीज़ पर प्रतिस्पर्धी विचारों के बारे में जागरूकता का संकेत देने वाली धारणा के रूप में प्रकट किया गया है।

इसका तात्पर्य किसी चीज़ के सापेक्ष, वंचित सत्य की उपस्थिति से है या दूसरे शब्दों में, इसका तात्पर्य इसके बारे में आधिकारिक या निरपेक्ष शब्द के डी (निर्माण) निर्माण से है। ठोसपन के दर्शन में स्थापित यह अवधारणा सत्य और उसकी निश्चितता की समस्या को नए सिरे से सामने लाती है। यह सत्य के एक गैर-सीमित चरित्र, उस पर फोकस की बहुलता, उसकी अनंतता की धारणा, यानी, एक विशाल, असीमित "इसके अस्तित्व का धन" मानता है। यदि एक संवाद शब्द आधिकारिक प्रवचन (avtoritetnoe slovo) का एक एंटोनिम है, और संवादवाद का अर्थ है विषय या सत्य की अवधारणा में विकेंद्रीकरण या एक केन्द्रापसारक बल (जैसा कि सीमांत हास्य शैलियों में स्पष्ट है), तो इन दो बख्तीनियन

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 3, March- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अवधारणाओं का समान मूल्य है हाइडेगेरियन दर्शन इस अर्थ में है कि इसने ऑन्कोलॉजी के इतिहास की डी(निर्माण) संरचना के लिए विस्तृत अवधारणाएँ लाई हैं। डी-(निर्माण) निर्माण के लिए हेइडेगेरियन आह्वान - जर्मन विनाश और ज़ेरस्टोरुंग नहीं - जो बाद में अमेरिकी पोस्टस्ट्रक्चरलिस्ट डीकंस्ट्रक्टिव हेर्मेनेयुटिक्स में गूँज उठा, जिसका अर्थ है कि "नष्ट करने का कार्य इतिहास के रचनात्मक संरक्षण का एक प्रयास है". इसके अलावा, संवाद की धारणा और "सच्चाई की बदनामी और असंबद्धता" पर हेइडेगेरियन विचार में समान निहितार्थ हैं। इसके अलावा, "एक शब्द, प्रवचन, भाषा या संस्कृति संवाद से गुजरती है"। माइकल होलक्विस्ट द्वारा बख्तिन पर टिप्पणियों में यह तर्क दिया गया है, जिन्होंने उत्तर अमेरिकी पढ़ने वाले लोगों के लिए सबसे सटीक अनुवाद के साथ-साथ बख्तिन के संवादवाद (1990) की समस्याओं पर एक व्यापक सर्वेक्षण भी दिया।

निष्कर्ष

व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर पहचान का निर्माण काफी हद तक साहित्य पर निर्भर करता है। पाठक स्वयं की समझ को बढ़ाने के लिए साहित्यिक कार्यों को एक परिवर्तनकारी उपकरण के रूप में उपयोग कर सकते हैं। पाठक पात्रों के अनुभवों, सांस्कृतिक उत्पत्ति और व्यक्तिगत विकास के प्रतिनिधित्व के माध्यम से अपनी स्वयं की पहचान के कई पहलुओं से जुड़ सकते हैं और उन्हें पहचान सकते हैं। पाठक इन आख्यानों में सक्रिय रूप से भाग लेकर मानव अस्तित्व की जटिलता और स्वयं की भावना पैदा करने वाले विभिन्न तत्वों की समझ प्राप्त करते हैं। कई दृष्टिकोणों के संपर्क के परिणामस्वरूप पहचान की उनकी धारणा का विस्तार होता है, जो सहानुभूति को भी बढ़ावा देता है और आत्म-खोज और व्यक्तिगत विकास की जटिल प्रक्रिया के बारे में उनकी जागरूकता को गहरा करता है। पाठक पात्रों के माध्यम से विभिन्न दृष्टिकोणों और कठिनाइयों की खोज कर सकते हैं, उनकी सहानुभूति को गहरा कर सकते हैं और आत्म-प्रतिबिंब को प्रोत्साहित कर सकते हैं। साहित्य अन्य आख्यानों के साथ बातचीत के माध्यम से पूर्व धारणाओं और पूर्वकल्पित मान्यताओं पर सवाल उठाकर पाठकों की धारणाओं को व्यापक बनाता है। विभिन्न पृष्ठभूमि, अनुभव और पहचान वाले पात्रों के संपर्क में आने से पाठकों को पहचान निर्माण की कठिनाइयों से अवगत कराया जाता

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 3, March- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

है। यह प्रदर्शन पाठकों को सरल धारणाओं से परे जाने और मानव पहचान की विविध प्रकृति के बारे में अधिक ज्ञान और सम्मान को बढ़ावा देकर मानव अनुभव की समृद्ध विविधता को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। अंत में, साहित्य एक दर्पण के रूप में कार्य करता है, पाठकों के अनुभवों की पुष्टि करता है और उन्हें मानव स्वभाव की समझ को गहरा करने के लिए नए और अज्ञात स्थानों में प्रवेश द्वार प्रदान करता है।

संदर्भ

1. अचेबे, सी. (1958)। चीजे अलग हो जाती है। विलियम हेनीमैन.
2. बॉमगार्डनर, ए.एच. (1990)। स्वयं को जानना स्वयं को पसंद करना है: आत्म-निश्चय और आत्म-प्रभाव। जर्नल ऑफ़ पर्सनैलिटी एंड सोशल साइकोलॉजी, 58, 1062-1072।
3. क्राम्श, सी. (1998)। भाषा और संस्कृति. ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस।
4. ओजैडे, टी. (1992)। आधुनिक अफ़्रीकी साहित्य और संस्कृति की पहचान। अफ्रीकी अध्ययन समीक्षा, 35(3), 43-57।
5. वॉकर, ए. (1982)। बैंगनी रंग। हरकोर्ट ब्रेस जोवानोविच।
6. वाइल्ड, ओ. (1890)। डोराएन ग्रे की तस्वीर। लिपिंकॉट की मासिक पत्रिका।
7. राइट, डी. ए. (2000)। सूचना के रूप में संस्कृति और भावात्मक प्रक्रिया के रूप में संस्कृति: एक तुलनात्मक अध्ययन। विदेशी भाषा इतिहास, 33(3), 330-41।
8. बख्तिन, एम.एम. दोस्तोवस्की की काव्यशास्त्र की समस्याएँ। ट्रांस. आर.डब्ल्यू. रोटसेल। एन आर्बर: आर्डिस, 1973।
9. बख्तिन, एम.एम. भाषण शैलियाँ और अन्य देर से लिखे गए निबंध। ईडी। और ट्रांस. कैरिल इमर्सन और माइकल होलक्विस्ट। ऑस्टिन: यू ऑफ़ टेक्सास पी, 1986।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 11 Issue 3, March- 2021
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 8.018
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

10. डी मैन, पॉल। "संवाद और संवादवाद।" पोएटिक्स टुडे 4.1 (1983): 99-107।

11. डेसकोम्बेस, विंसेंट। आधुनिक फ्रांसीसी दर्शन. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूपी, 1980।

12. हाइडेगर, मार्टिन। अस्तित्व और समय. ट्रांस. जॉन मैक्वेरी और एडवर्ड रॉबिन्सन। ऑक्सफोर्ड: ब्लैकवेल, 1973.

13. हाइडेगर, मार्टिन। "कला के कार्य की उत्पत्ति।" संदर्भ में विखंडन: साहित्य और दर्शन। ईडी। मार्क सी. टेलर. शिकागो: यू ऑफ़ शिकागो पी, 1986. 256-79।

14. होलक्विस्ट, माइकल। संवादवाद: बख्तीन और उसकी दुनिया। लंदन: न्यू एक्सेंट, 1990।

15. होलक्विस्ट, माइकल, एड. द डायलॉगिक इमेजिनेशन: फोर एसेज़, एम.एम. द्वारा बख्तिन. ऑस्टिन: यू ऑफ़ टेक्सास पी, 1981।

16. केर्श्नर, आर.बी. जॉयस, बख्तीन, और लोकप्रिय साहित्य। चैपल हिल: यू ऑफ़ नॉर्थ कैरोलिना पी, 1989।

17. लीच, विंसेंट बी. डिकंस्ट्रक्टिव आलोचना। न्यूयॉर्क: कोलंबिया यूपी, 1983।

18. वोलोशिनोव, वी.एन. [एम.एम. बख्तिन]। मार्क्सवाद और भाषा का दर्शन. ट्रांस. लादिस्लाव मतेज्का और आई.आर. टाइटुनिक। न्यूयॉर्क: सेमिनार पी, 1973